अध्याय 38

परमेश्वर का पहला संदेश (भाग 1)

परमेश्वर के बवंडर में से उत्तर देने पर (38:1–41:34) आसमान की खामोशी टूट गई! परमेश्वर ने अपने सताए हुए सेवक से बात करना मान लिया। अंत में अय्यूब की इच्छा पूरी हो गई। फिर भी "परमेश्वर का उत्तर" अय्यूब की उम्मीद से कहीं बढ़कर। उसने धर्मियों के ऊपर आने वाले दु:खों की व्याख्या नहीं की इसके बजाय उसने अय्यूब (और इन शानदार उपदेशों को पढ़ने वाले सब लोगों) से संसार को ईश्वरीय दृष्टिकोण से देखने को कहा। विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है:

> अंत में परमेश्वर मंच पर आता है और अय्यूब की ढेर सी चुनौतियां सामने रखता है। ये चुनौतियां प्रश्नों के रूप में हैं जो अय्यूब से अपनी समझ या समझ की कमी को दिखाने का न्योता देती हैं। अय्यूब से किए परमेश्वर के प्रश्नों का उद्देश्य न तो इस समस्या का उत्तर देना है कि निर्दोष लोगों को आम तौर पर दु:ख क्यों उठाना पड़ता है और न ही यह कि अय्यूब को दु:ख क्यों उठना पड़ा, बल्कि अय्यूब को संसार के उस बड़े नमूने के प्रकाश में अपने मामले को समझाना है जिसे सृष्टिकर्त्ता ने बनाया है।[1]

परमेश्वर के पहले संदेश को पढ़ना आरम्भ करते ही, झट से अय्यूब से पूछे गए एक के बाद एक प्रश्नों में ताने के इस्तेमाल को समझ जाता है। एडविन एम. गुड ने आरम्भिक संदेश को ईश्वरीय ताने के प्रदर्शन के रूप में देखा जो कटाक्ष पर आधारित है।[2] पुस्तक के अपने साहित्य विशेषण में रॉबर्ट एच. फेफर ने एक कदम आगे निकलकर यह आरोप लगाया कि परमेश्वर ने अय्यूब के साथ "एक के बाद एक कटाक्ष भरे प्रश्नों" के साथ बात की।[3] आर. ए. एफ. मकैंज़ी इस बात से सहमत नहीं था। "उसने कहा कि कटाक्ष में ईर्ष्या या कड़वाहट का भाव होता है और याहवेह के संदेश में निश्चय ही इन दोनों का कोई सुराग नहीं है।"[4] दूसरी ओर ताना कटाक्ष से अधिक सहनीय है और इसमें क्रोध नहीं है। मकैंज़ी ने ताने को अय्यूब के अपने सृजित जीव होने की बात मन में डालने तथा हम पर भी यह स्पष्ट करने का दोहरा उद्देश्य कि यह अनुग्रह प्रभु दर्शन माना है।[5] गुड ने इस बात का दावा किया कि दो विशेषताओं से यह ताना असंगति की अन्य किस्मों से अलग है:

> पहला बात कहने का माध्यम है, जिसे स्पष्ट बात के बजाय कम बयानी या सुझावों का तरीका बताया जा सकता है। दूसरा सच्चाई की मुद्रा है जिससे समझ आती है। ... सच्चाई का दर्शन ताने के तौर पर की गई आलोचना को या शून्य को होने से रोकता है। इसलिए यह केवल विरोध ही नहीं बल्कि शब्द के शानदार अर्थ में आपत्ति उठाना भी है जो कि किसी एक बात से बढ़कर किसी दूसरी बात का पक्ष लेने की पुष्टि करना है।[6]

यहोवा के पहले संदेश में ये उपदेश स्पष्ट मिलते हैं (38:1–40:2):

(1) *मनुष्य की सीमा की पहचान।* अय्यूब ने संसार के परमेश्वर के संचालन में दोष निकाला (24:1)। उसने संकेत दिया था कि परमेश्वर को मालूम नहीं है कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है। एक के बाद एक लगभग साठ प्रश्नों के साथ परमेश्वर ने अय्यूब से संसार के विषय में पूछा। अय्यूब को अपनी अज्ञानता को मान लेना चाहिए था। उसे यह मालूम नहीं था कि संसार का संचालन कैसे किया जाता है परन्तु फिर भी व्यवस्था और खाका है। सृष्टि सृजनहार की ओर ध्यान दिलाती है।

(2) *परमेश्वर का जंगली जानवरों के लिए मुहैया करवाना।* परमेश्वर ने उन जानवरों के लिए उदाहरण दिए जिनका मनुष्य के ऊपर कोई नियन्त्रण नहीं है। अय्यूब उनकी प्रकृति, आरम्भ तथा उन्हें संचालित करने वाले नियमों का जवाब नहीं दे पाया। वह जानवरों की असाधारण सहजबुद्धि के अर्थ की गहराइयों को समझ नहीं पाया फिर वह उनका ध्यान रखता है।[7]

(3) *परमेश्वर का स्वप्रकाशन।* अय्यूब के मन में था कि वह परमेश्वर से दूर है (6:2–7)। उसे लगता था कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है। यहोवा के प्रकट होने से अय्यूब और उसके बीच की खाई मिट जाती है। यह पुस्तक को इसके बड़े चरम तक ले आता है। यहोवा ने चाहे अय्यूब की उसकी शर्तों पर उत्तर नहीं दिया पर वह उसको उत्तर अवश्य देता है। जैसा कि फ्रांसिस आई. एंडरसन ने लिखा है, "अय्यूब के लिए केवल इतना ही काफ़ी है कि परमेश्वर ने उसके साथ बात की। उसे केवल इतना ही जानना आवश्यक है कि उसके और परमेश्वर के बीच में अभी भी सब कुछ ठीक ठाक है।"[8]

"क्या तू मुझे समझा सकता है?" (38:1–3)

[1]तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यूँ उत्तर दिया, [2]"यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ना चाहता है? [3]पुरुष के समान अपनी कमर बाँध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे।"

आयत 1. भूमिका की तरह यहां पर भी परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम (*YHWH, यहवह*) का इस्तेमाल किया गया है। पूरी बातचीत में "परमेश्वर" (*'El, इल; 'Eloah, इलोह; 'Elohim, इलोहिम*) और "सर्वशक्तिमान" (*Shadday, शद्दै*) सहित परमेश्वर के अधिक सर्वनामों का इस्तेमाल हुआ है। प्रभु या "याहवेह" नाम मूसा पर जलती हुई झाड़ी में प्रकट किया गया (निर्गमन 3:1–15)। इसका सम्बन्ध छुटकारे के साथ है।

उत्तर दिया को "किसी प्रश्न का उत्तर देने, परन्तु अधिक सामान्यतया 'बात की, कहा, सम्बोधित किया' जैसे अधिक सामान्य अर्थ में" नहीं समझा जाना चाहिए।[9] **आंधी** (*s^e'arah, सेआराह*) वही इब्रानी शब्द नहीं है जिसका इस्तेमाल तूफ़ान के विवरण के लिए एलीहू ने किया (37:9)। यह शब्द भयंकर, प्रचण्ड तूफ़ान के लिए है। पुराने नियम में तूफ़ान को आम तौर पर परमेश्वर के प्रकट होने से जोड़ा जाता है (निर्गमन 19:16–20; न्यायियों 5:4, 5; भजन संहिता 18:7–15; हबक्कूक 3:5, 6)।

आयत 2. युक्ति का अनुवाद *'etsah* (*एटसाह*) शब्द से किया गया है, जिसका अर्थ

है ''विचार, उद्देश्य, योजना, नमूना।'' भजनकार ने लिखा है, ''यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी'' (भजन संहिता 33:11)। **अज्ञानता की बातें कहकर** परमेश्वर की युक्ति को बिगाड़ने का अर्थ उसके और संसार को उसके चलाने के बारे में ढिठाई से बोलना था।

आयत 3. ''पुरुष के समान अपनी कमर बांध ले।'' यह रूपक कठिन काम करने के लिए तैयारी करने वाले आदमी का है (1 राजाओं 18:46; यिर्मयाह 1:17)। कुछ संस्करणों में ''अपनी कमर बांध ले'' अभिव्यक्ति का अर्थ ''कसकर पकड़ ले'' हुआ है (NEB; NIV; NJB; NLT)। परमेश्वर ने अपने दूसरे संदेश के आरम्भ में अय्यूब के साथ इस दूसरी आज्ञा को दोहराया (40:7)।

''क्यों मैं तुझ से प्रश्न करता हूं और तु मुझे उत्तर दे!'' यहोवा यह कह रहा था कि वह अय्यूब से प्रश्न ''पूछेगा'' और अय्यूब अपने उत्तरों के द्वारा उसे ''उत्तर'' देगा। ''उत्तर'' शब्द का अनुवाद *yada'* (*यादा*), से किया गया है जिसका अक्षरशः अर्थ, ''समझाना'' या ''बताना'' है। इस अभिव्यक्ति में छिपे ताने पर ध्यान दें! यह पहली कक्षा के छात्र से किसी जटिल समस्या को सुलझाने के लिए किसी प्रसिद्ध गणितज्ञ के सवाल करने जैसा होगा।

हमारे सीमित मानवीय दृष्टिकोण से परमेश्वर तथा उसके कार्यों का निर्णय करना असम्भव है। यह इतना छोटा है कि इसे समझ नहीं सकता। परमेश्वर भरोसे और वफ़ादारी के साथ उसकी इच्छा के सामने विनम्र समर्पण चाहता है। अय्यूब को इस सच्चाई को समझाना, एक के बाद एक तेजी से पूछे गए सवालों के हमले का एक बड़ा उद्देश्य यही है।

पृथ्वी की नींव रखे जाना (38:4-7)

4''जब मैं ने पृथ्वी की नींव डाली, तब तू कहाँ था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे। 5उसकी नाप किसने ठहराई, क्या तू जानता है! उस पर किसने सूत खींचा? 6उसकी नींव कौन सी वस्तु पर रखी गई, या किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया, 7जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे?''

आयतें 4-7. परमेश्वर ने पृथ्वी से सम्बन्धित पांच प्रश्नों के साथ आरम्भ किया। अय्यूब एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया। परमेश्वर के प्रश्न पूछने को अंतिम परीक्षा से मिलाया गया है जिसमें अय्यूब को पूरे-पूरे अंक मिले: ''0''! उसके पास उसके सामने रखे गए यहोवा के किसी भी सवाल का जवाब नहीं था।

बेशक हम वहां नहीं थे, पर हम परमेश्वर के वचन में विश्वास से मानते हैं कि परमेश्वर ने पृथ्वी को सृजा। इब्रानियों के लेखक ने लिखा है, ''विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो'' (इब्रानियों 11:3)।

बाइबल में संसार की सृष्टि को दर्शाने के लिए कई रूपकों का इस्तेमाल किया गया है। यहां पर परमेश्वर को एक भवन का निर्माण करने वाले चीफ़ इंजीनियर के रूप में दिखाया गया है: उसने **नींव डाली, उसकी नाप ठहराई, उस पर सूत खींचा, उसकी नींव रखी**, और **उसके कोने का पत्थर बिठाया**।

परमेश्वर के पुत्र यानी स्वर्गदूतों (1:6 पर टिप्पणियां देखें) ने **जय जयकार करते** हुए परमेश्वर के संसार को सृजे जाने पर प्रतिक्रिया दी। **भोर के तारे** के सम्बन्ध में जॉन ई. हार्टले ने लिखा है:

> उत्पत्ति 1 में तारों की सृष्टि चौथे दिन हुई थी, परन्तु यहां पर वे स्पष्ट के आरम्भिक चरणों में थे। स्पष्टतया यह अंतर इस बात का संकेत है कि यहां पर 'भोर के तारे' मुख्यतया वह शब्द है जो 'परमेश्वर के पुत्रों' की समरूपता को बनाता है जो यह माना जाता है कि पृथ्वी के सृजे जाने से पहले थे। इसका अर्थ यह हुआ कि इन स्वर्गीय जीवों की बात लाक्षणिक रूप में भौतिक तारों के अस्तित्व से अलग है।[10]

समुद्र की बाड़ लगाए जाना (38:8–11)

[8]''फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला, तब किसने द्वार बन्द कर के उसको रोक दिया; [9]जब कि मैं ने उसको बादल पहिनाया और घोर अन्धकार में लपेट दिया, [10]और उसके लिये सीमा बाँधी, और यह कहकर बेंड़े और किवाड़ें लगा दिए, [11]'यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी उमंडनेवाली लहरें यहीं थम जाएँ'?''

आयतें 8–11. सृष्टि के तीसरे दिन परमेश्वर ने समुद्र को बनाया (उत्पत्ति 1:9, 10)। यहां पर **समुद्र** को एक बच्चे के रूप में दिखाया गया है जो अपनी मां के **गर्भ से फूट निकला**। परमेश्वर ने समुद्र को **बादल** और **घोर अंधकार में** ऐसे छिपा लिया जैसे नवजात शिशु को छिपाया जाता है (यहेजकेल 16:4; लूका 2:7)।

समुद्र के ऊपर परमेश्वर के अधिकार का संकेत इस तथ्य से दिया गया है कि उसने **उसके लिए सीमा बांधी और बेंड़े** या आड़ **और किवाड़ें लगा दिए**। बिना किसी शक के यह बात समुद्र तट के पास पास के रेतीले समुद्र तटों, चट्टानों तथा टीलों का रूप है जो जल को सूखी भूमि से अलग करते हैं (देखें नीतिवचन 8:29; यिर्मयाह 5:22)। परमेश्वर ने समुद्र के लिए सीमाओं की आज्ञा दी है: **'''यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी उमंडनेवाली लहरें यहीं थम जाएँ'?''** कोई भी व्यक्ति जिसने उफनते समुद्र से होने वाले विनाश को देखा हो, वह भजनकार के साथ यही गाएगा:

> तू ने उसको गहिरे सागर से ढांप दिया है जैसे वस्त्र से; जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया। तेरी घुड़की से वह भाग गया; तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया। वह पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गया जिसे तू ने उसके लिये तैयार किया था (भजन संहिता 104:6–9)।

अय्यूब केवल परमेश्वर की सृष्टि को देखकर भयभीत हो सकता था। उसका समुद्र की सीमाएं ठहराने से काई सम्बन्ध नहीं था।

भोर का पौ फटना (38:12–15)

[12]''क्या तू ने अपने जीवन में कभी भोर को आज्ञा दी, और पौ को उसका स्थान

जताया है, [13]ताकि वह पृथ्वी के छोर को वश में करे, और दुष्ट लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ? [14]वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर के नीचे चिकनी मिट्टी बदलती है, और सब वस्तुएँ मानो वस्त्र पहिने हुए दिखाई देती हैं। [15]दुष्टों से उनका उजियाला रोक लिया जाता है और उनकी बढ़ाई हुई बाँह तोड़ी जाती है।''

आयतें 12–15. प्रश्नों के अगले समूह में **पौ** के आने के आश्चर्यों पर विचार किया गया है। परमेश्वर के विपरीत अय्यूब के कभी **भोर को आज्ञा** नहीं दी। हार्टले ने बताया है:

> सृष्टि के पहले दिन परमेश्वर ने ज्योति को अस्तित्व में आने की आज्ञा दी। ... इसके बाद हर उस पहले दिन को अमल में लाना है। यानी प्राचीन समय के लिए प्रकृति को अव्यक्तिगत प्रणाली अर्थात मशीनी नियमों के रूप में न देखते हुए, दिनों के एक के बाद एक के आने को पक्का नहीं मानते थे, बल्कि यह मानते थे कि परमेश्वर हर नये नियम को अस्तित्व में आने को कहता है।[11]

हम में से हर कोई **पृथ्वी के छोर को वश में करने के लिए** सुन्दर सूर्योदय के दृश्य से भयभीत हुआ है। स्पष्टता से इसके आकारों तथा रंगों को दिखाते हुए सूर्य की चमकदार किरण संसार को रोशन करने लगती हैं। चमचमाती पृथ्वी उस बदली हुई **मिट्टी** की तरह होती है जो गहन नमूने को दिखाती हुई मुहर के साथ ठप्पा लगाया गया है (33:16 पर टिप्पणियां देखें)। यह **वस्त्र** के जैसी भी दिखती है शायद रंगदार और सुन्दर वस्त्र के जैसी (देखें उत्पत्ति 37:3)।

भोर की चमक **दुष्टों** को भगा देती हैं जिन्होंने ''अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम प्रिय थे'' (यूहन्ना 3:19)। अय्यूब ने ऐसे लोगों का वर्णन इस प्रकार से किया है:

> व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए, दिन डूबने की राह देखता रहता है, और वह अपना मुंह छिपाए भी रखता है। वे अन्धियारे के समय घरों में सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं; वे उजियाले को जानते भी नहीं। इसलिये उन सभों को भोर का प्रकाश घोर अन्धकार सा जान पड़ता है, क्योंकि घोर अन्धकार का भय वे जानते हैं (24:15–17)।

बढ़ाई हुई बांह तोड़ी जाती है का अर्थ है कि दुष्ट लोग प्रबल नहीं होंगे क्योंकि परमेश्वर इसके विरुद्ध हस्तक्षेप करेगा।

समुद्र के सोते (38:16–18)

[16]''क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक पहुँचा है, या गहिरे सागर की थाह में कभी चला फिरा है? [17]क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट हुए? क्या तू घोर अन्धकार के फाटकों को कभी देखने पाया है? [18]क्या तू ने पृथ्वी की चौड़ाई को पूरी रीति से समझ लिया है? यदि तू यह सब जानता है, तो बतला दे।''

आयतें 16–18. तेजी से पूछे गए पांच प्रश्नों से अय्यूब के **समुद्र के सोतों**, **गहिरे सागर**

की थाह, तथा **मृत्यु के फाटक** तक अय्यूब के ज्ञान को परखा जाता है। पहले दो प्रश्न "मृत्यु के फाटक" अर्थात **घोर अंधकार के फाटकों** के उसके ज्ञान को परखने के लिए रूपक के द्वारा इस्तेमाल किए गए हैं। "मृत्यु के फाटक" "उन फाटकों का संकेत देते हैं" "जो ऐसे संस्थान के प्रवेश को दर्शाते हैं।"[12] फिर से ताने का इस्तेमाल किया गया है: **"यदि तू यह सब जानता है, तो बतला दे।"** अपने भाषण में कई बार मृत्यु, कब्र, तथा अधोलोक की बात की थी पर इनकी वास्तविकताओं का उसे खुद कुछ पता नहीं था।

उजियाले और अंधेरे का निवासस्थान (38:19–21)

[19]"उजियाले के निवास का मार्ग कहाँ है, और अन्धियारे का स्थान कहाँ है? [20]क्या तू उसे उसकी सीमा तक हटा सकता है, और उसके घर की डगर पहिचान सकता है? [21]निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता होगा! क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न हो चुका था, और तू बहुत आयु का है।"

आयतें 19–21. लोग पुराने समय से इस पर विचार करते रहे हैं कि **उजियाले के निवास का मार्ग कहाँ है**। अपनी खुद की समझ से उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। न ही वे जान पाए कि **अंधियारे का स्थान कहा है**। बुद्धिमान से बुद्धिमान लोगों के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। इसके विपरीत परमेश्वर के पास इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान है। आखिर उस ने ज्योति को बनाया और सृष्टि के पहले दिन इसे अंधकार से अलग किया (उत्पत्ति 1:3, 4)। दिन और रात की लम्बाई तय करना उसकी जिम्मेदारी है, जो कि संसार के अलग-अलग भागों में तथा अलग-अलग मौसम में अलग-अलग है। रेबर्न ने इस बात को समझा कि:

> आयत 19 में *उजियाले* और *अंधियारे* उन लोगों को कहा गया है जिनके निवास स्थान हैं। प्रत्येक अपने निवास में से निकलता और बाद में उसमें लौट जाता है। उजियाला सुबह के समय अपने घर से निकलता और रात के समय इसमें लौट जाता है। फिर अंधेरा अपने निवास में से निकलता और पो फटने पर लौट जाता है।[13]

फिर से परमेश्वर की घोषणा में हमें यह ताना मिलता है: **"निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता होगा! क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न हो चुका था, और तू बहुत आयु का है।"** अय्यूब अपने समाज में चाहे दूसरों से बड़ा था पर किसी भी प्रकार से वह पैदा होने वाला पहला मनुष्य नहीं था (15:7)। उसके लिए इन सब बातों को जानने का कोई सम्भावित तरीका नहीं था क्योंकि वह तब नहीं था जब परमेश्वर ने संसार को सृजा। ताने के सम्बन्ध में सेमुएल कॉक्स की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है:

> मंदबुद्धि लोगों का जो हम सब के बनानेवाले के ताने के आरोप पर नाराज़ होते हैं, मुख्य रूप में, मुझे संदेह है, क्योंकि यह वह हथियार है जो उन्हें अत्यधिक उत्सुकता से घायल करता है, क्योंकि यह उनकी समझ और प्रतिष्ठा की गम्भीर मान्यताओं को और अपने आप को स्वीकृत करने को अंदर तक झंझोड़ देता है, क्योंकि उसके विरुद्ध उनका कोई बचाव नहीं है, जबकि उन्हें लगता है कि उनका बचाव है; और ऐसे बहुत से लोग हैं जो

बेअदबी या अति साहस होने के कारण इस से पीछे हट जाते हैं। परन्तु कोई भी ईमानदार व्यक्ति, चाहे वह कितना भी मंदबुद्धि क्यों न हो, चाहे कितना भी भक्तिमय क्यों न हो, इनकार कर सकता है कि बाइबल में भी यहां पर, ताना यहोवा की ओर से दिया गया बताया गया है; और उसे तो इसे उस धर्मी के विरुद्ध बदलते हुए दिखाया गया है जिसकी खराई पर वह घमण्ड किया करता था– सचमुच में उसे इस के साथ हानि पहुंचाकर, पर केवल घायल करके ताकि वह उसे ठीक कर सके।[14]

हिम और ओलों के भण्डार (38:22–24)

22"फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार में पैठा, या कभी ओलों के भण्डार को तू ने देखा है, 23जिसको मैं ने संकट के समय और युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है? 24किस मार्ग से उजियाला फैलाया जाता है, और पुरवाई पृथ्वी पर बहाई?"

आयतें 22–24. हिम तथा **ओलों** को अनोखे रहस्य माना जाता था। "हिम" यानी बर्फ को जहां एक ओर इसकी सुन्दरता के लिए सराहा जाता था वहीं यह शत्रु के लिए विनाशकारी साबित हो सकती थी। "ओलों" को भयानक बल के रूप में देखा जाता था। हिम और ओलों को परमेश्वर के शस्त्रागार में हथियारों के रूप में दिखाया जाता है। जिसने **भण्डार** में **युद्ध और लड़ाई के दिन के लिये रख छोड़ा है?** पुराने नियम में परमेश्वर ने बुराई करने वालों को दण्ड के रूप में कई बार ओलों का इस्तेमाल किया (निर्गमन 9:17–25; यहोशू 10:11; यशायाह 28:2, 17; हाग्गै 2:17)।

सृष्टि के समय परमेश्वर ने अंधकार से **उजियाला फैलाया** था (उत्पत्ति 1:14–18)। कुछ संस्करणों में "उजियाला" (*'or, ओर*) का अनुवाद बिदली हुआ है (NIV; NJB; CEV); हिंदी तथा NASB में इसका अनुवाद बिजली हुआ है (36:32; 37:3, 11, 15)। **पुरवाई** जो अरब के रेगिस्तान से आती है बहुत सूखी ओर गर्म होती है।

प्रकृति का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:25–30)

25"महावृष्टि के लिये किसने नाला काटा, और कड़कनेवाली बिजली के लिये मार्ग बनाया है, 26कि निर्जन देश में और जंगल में जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता मेंह बरसाकर, 27उजाड़ ही उजाड़ देश को सींचे, और हरी घास उगाए? 28क्या मेंह का कोई पिता है, और ओस की बूंदें किसने उत्पन्न की? 29किसके गर्भ से बर्फ निकला है, और आकाश से गिरे हुए पाले को कौन उत्पन्न करता है? 30जल पत्थर के समान जम जाता है, और गहिरे पानी की सतह जम जाती है।"

आयतें 25–27. प्रश्नों का यह समूह मनुष्य की समझ के विपरीत परमेश्वर की समझ को दिखाता है। पृथ्वी पर वर्षा भेजने के लिए परमेश्वर ने **महावृष्टि के लिये किसने नाला** बनाया था। बहुत से लोग **निर्जन** देश और **जंगल** में पानी देने को संसाधनों की बर्बादी मानेंगे। हार्टले ने लिखा है, "अपनी काल्पनिक समझदारी भरी (चाहे स्वार्थी) योजना में वे मौसम का प्रबंध

अपने लाभ और सुख के लिए करेंगे। जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा और खेत जंगल बन जाएंगे।''[15] निर्जन देश को पानी देना उन इलाकों के जीव जंतुओं के लिए **हरी घास** उगाने के लिए आवश्यक है। इसके अलावा होमेर हेली ने ध्यान दिलाया:

> पानी चाहे जंगलों में जाए चाहे दूर देहातों तथा नगरों में लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वालों के लिए भूमि के नीचे जाए जिसमें वह कूएं से पानी निकले, या सोतों और झरनों में से खेती तथा जहाजरानी के लिए इस्तेमाल किए जाने के लिए नदियों में बह जाए।[16]

आयतें 28-30. यहां पानी को **मेह**, **ओस की बूंदे**, **बर्फ**, और **पाले** के अलग-अलग रूपों में चित्रित किया गया है। इनका न तो कोई **पिता** था और न वे किसी मां के **गर्भ** से निकले थे यानी वे ''नन्हें देवी देवता नहीं थे जिनके माता-पिता थो, जैसा कि प्राचीन कथा कहानियों में बताया जाता था।''[17] बल्कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने रचा था (भजन संहिता 147:16-18)।

''ओस'' के सम्बन्ध में रॉबर्ट एल. आल्डन का यह कहना था, ''मध्य पूर्व की कड़ी गर्मी में, लोग और पौधे अपने संसार को पानी देने के लिए ओस पर निर्भर होते होंगे क्योंकि विषवों अर्थात रात दिन बराबर होने का समय (मध्य-मार्च से मध्य-सितम्बर) के भी बीच कोई वर्षा नहीं होती।''[18] ''पाला'' भूमि पर गिरी ओस को कहा जाता है जो हम जानते है। ''बर्फ'' इस इलाके में रहने वालों के लिए सचमुच में दिलचस्प विषय होगा। कइयों ने तो इसे हारमोन पहाड़ या किसी ऐसे अन्य पहाड़ों के अलावा कहीं नहीं देखा। जब **जल** बर्फ में बदल जाता है तो यह **पत्थर के समान** बन जाता है जिससे **गहरे पानी की सतह** जम जाती है।

आकाशमण्डल का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:31-33)

31''क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूँथ सकता या मृगशिरा के बन्धन खोल सकता है? 32क्या तू राशियों को ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता, या सप्तर्षि को साथियों समेत लिए चल सकता है? 33क्या तू आकाशमण्डल की विधियाँ जानता और पृथ्वी पर उनका अधिकार ठहरा सकता है?''

आयतें 31-33. कचपचिया,[19] **मृगशिरा**,[20] और **सप्तर्षि**[21] सब तारों के झुण्ड थे। अय्यूब ने पहले ही यह मान लिया था कि परमेश्वर ने उन्हें बनाया था (9:5-9 पर टिप्पणियां देखें)। इब्रानी शब्द *mazzaroth* (*मज्जारोथ*), जिसका अनुवाद **राशियों** किया गया है, के सही सही अर्थ पर विवाद है जिस कारण कुछ संस्करणों में इस शब्द के व्यक्तिवाचक नाम का लिप्यन्त्रण दिया गया है (KJV; ASV; NRSV; NJPSV)। सप्तर्षि के **साथियों** या अधिक अक्षरश: ''पुत्रों'' का अर्थ ''*अर्स माइनर* या ऋक्ष के 'लिटल बियर' जिसे 'लिटल डिप्पर''' भी कहा जाता है जिसमें नार्थ स्टार या पोलारिस आते हैं को कहा गया हो सकता है।[22] एक और सम्भावना यह है कि ''साथियों'' सप्तर्षि या बिग डिप्पर के ''हैंडल'' को कहा गया है जो बियर टेल के तीन तारे में है।''[23]

यह स्पष्ट है कि अय्यूब का किसी राशि पर कोई नियन्त्रण नहीं था। जैसा कि **गूंथ**, **खोल**, **उदय कर**, **चल** जैसे शब्दों पर ज़ोर दिया गया है। तारे सृजनहार के प्रबंधन के तहत हैं।

आकाशमण्डल की विधियां ''विभिन्न खगोलीय पिंडों की हलचल को संचालित करने वाले नियमों'' के लिए कहा गया है।[24]

बादलों का ईश्वरीय नियन्त्रण (38:34–38)

[34]''क्या तू बादलों तक अपनी वाणी पहुँचा सकता है, ताकि बहुत जल बरस कर तुझे छिपा ले? [35]क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है कि वह जाए, और तुझ से कहे, 'मैं उपस्थित हूँ'? [36]किसने अन्तःकरण में बुद्धि उपजाई, और मन में समझने की शक्ति किसने दी है? [37]कौन बुद्धि से बादलों को गिन सकता है? और कौन आकाश के कुप्पों को उण्डेल सकता है, [38]जब धूलि जम जाती है, और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं?''

आयतें 34–38. यहोवा ने अय्यूब से मौसम विज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पूछना जारी रखा जिसकी उसे कोई जानकारी नहीं थी। **किसने अन्तःकरण में बुद्धि उपजाई, और मन में समझने की शक्ति किसने दी है?** *Tuchoth* (*टुचोथ*) और *śekwi* (*सेक्वी*), जिनका अनुवाद NASB में ''अंतःकरण'' तथा ''मन'' किया गया है को अन्य अर्थों में समझा गया है। वे बादलों या खगोलीय पिंडों की अलग किस्म हो सकती हैं।[25] यह प्रश्न मनुष्यों से जुड़ा हो या आकाश से, उत्तर एक ही है कि परमेश्वर सब का सृजनहार है। बाइबल ने केवल यहीं पर वर्षों को **आकाश के कुप्पों** (या ''मशकों''; NJB) के साथ मिलाया गया है। ऐसी झड़ियों से **धूलि जम जाती है, और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं?**

वन्य जीवन के लिए उसका प्रबन्ध (38:39–41)

[39]''क्या तू सिंहनी के लिये अहेर पकड़ सकता, और जवान सिंहों का पेट भर सकता है, [40]जब वे मांद में बैठे हों और आड़ में घात लगाए दबक कर बैठे हों? [41]फिर जब कौवे के बच्चे परमेश्वर की दोहाई देते हुए निराहार उड़ते फिरते हैं, तब उनको आहार कौन देता है?''

संदेश में यहां पर प्रश्न आकाशीय पिंडों की बातों से परमेश्वर के पशु तथ पक्षियों की देखभाल और चिंता में मुड़ जाते हैं। घोड़ों को छोड़कर, दोनों ही मामलों में जानवर जंगली हैं, यानी उन्हें पालतू नहीं बनाया गया है।

आयतें 39, 40. बाइबल में किसी भी अन्य जंगली जानवर से बढ़कर **सिंह** का उल्लेख हुआ है। अपने पहले भाषण में एलीपज ने सिंह तथा **जवान सिंह** की बात की थी (4:10)। उस संदर्भ में परमेवर के द्वारा उनके विनाश की बात कही गई थी, जबकि इस संदर्भ में उनके बचाव पर ज़ोर दिया गया है। रोअले ने लिखा है,

> सिंह किसी भी मनुष्य से बढ़कर अपने शिकार को सुरक्षित रखने में समर्थ है, और कोई भी मनुष्य इस प्रकार से उसे हिस्सा देने में दिलचस्पी नहीं देगा। फिर भी परमेश्वर उसका ख्याल रखता है और उसने उसे अपने शिकार का पीछा करने की सामर्थ और चतुराई भी दी है, और उसके शिकार को उसके ईलाके में आने देता है।[26]

भजन संहिता 104:21 कहता है, ''जवान शेर शिकार के लिए गरजते हैं और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं।''

आयत 41. पक्षियों में से **कौवे** को ही नूह द्वारा जहाज में से बाहर भेजा गया था (उत्पत्ति 8:7)। फिर से यहां पर यह समझाया गया है कि **परमेश्वर** अपने जीव जंतुओं के लिए उपाय करता और उनकी देखभाल करता है। न केवल परमेश्वर सामर्थी सिंह के लिए उपाय करता है बल्कि वह आकाश के पक्षियों के लिए भी उपाय करता है।

प्रासंगिकता

प्रश्नों का उपयोग (अध्याय 38–41)

अय्यूब 38–41 में अपने सारे संदशो में परमेश्वर ने अय्यूब को उसकी समझ की कमी पर विश्वास दिलाने तथा अय्यूब को उस पर पूरी तरह से भरोसा रखना सिखाने के लिए इस्तेमाल किया। इन प्रश्नों से मनचाहा परिणाम मिला। जब परमेश्वर ने अपनी बात खत्म कर ली तो अय्यूब ने ऐलान किया, ''इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है और मैं धूल और राख में पश्चात्ताप करता हूं'' (42:6)।

उत्तम गुरु, यीशु उन लोगों को चुनौती देने के लिए जिन्हें वह सिखाने की कोशिश कर रहा होता था, प्रश्नों का इस्तेमाल कर रहा होता था। (1) एक कहानी बताने के लिए जिसमें दो कर्जदारों को अलग–अलग राशियों के लिए क्षमा किया गया था वहीं इसी ने शमौन नाम के अपने आप में धर्मी एक फरीसी से पूछा, ''इसलिए उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा।'' (लूका 7:42)। (2) जब एक व्यवस्थापक ने यीशु ने पूछा कि अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए वह क्या करे तो उसने प्रश्नों के साथ उसे उत्तर दिया, ''व्यवस्था में क्या लिखा है ? तू कैसे पढ़ता है ?'' (लूका 10:26)। (3) यीशु ने अपनी पहचान के सम्बन्ध में आम लोगों के बीच पाए जाने वाले विचार के बारे में अपने चेलों से पूछा। फिर उनकी ओर मुड़कर वह प्रश्न पूछने लगा जिसके बदले में पतरस का अच्छा अंगीकार मिला, यीशु ने पूछा, ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो ?'' (मत्ती 16:15)। (4) जब यरूशलेम के धार्मिक अधिकारियों ने उसके अधिकार को चुनौती दी तो यीशु ने एक सवाल के साथ उन्हें खामोश कर दिया: ''यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था स्वर्ग से या मनुष्यों की ओर से ?'' (मत्ती 21:25)। (5) यीशु ने फरीसियों के एक समूह को जिन्होंने मान लिया था कि मसीह दाऊद का पुत्र था हैरान कर दिया था। पवित्र शास्त्र की एक बात से दोहराते हुए उसने पूछा, ''तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है'' (मत्ती 22:43)।

आज प्रश्न सिखाने का एक जबर्दस्त तरीका हो सकते हैं। जिन लैक्चरों से सुनने वाले विचार करने के लिए मज़बूर नहीं होते वे आम तौर पर भैंस के आगे बीन बजाने जैसा होता है; सुनने वालों को कोई दिलचस्पी नहीं रहती और वे सोने लगते हैं। हम में से जो लोग सिखाने या प्रचार करने का काम करते हैं वे बातचीत की अपनी शैली में सवालों को लाकर परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करके अच्छा करेंगे।

आकाश और पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर का शासन (38:1–38)

बहुत सा दु:ख, ठट्ठा, आलोचना सहने के बाद परमेश्वर से मिलने के लिए अय्यूब की

विनती को आखिर मान लिया गया। अपनी खामोशी भंग करते हुए यहोवा ने अपने सेवक को बवण्डर में से उत्तर दिया (38:1-3)।

परमेश्वर ने उसके दु:खों के कारणों का अर्थ बताने के बजाय अय्यूब पर एक के बाद एक प्रश्नों की बौछार कर दी। ऐसा उसने अय्यूब को उसमें भरोसा रखने की चुनौती से किया। निश्चय ही आज परमेश्वर के लोगों को यह याद दिलाया जाना आवश्यक है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के ऊपर प्रभुत्व रखता है। हमारे जीवनों की परिस्थितियां आरा (पहेली) के टुकड़ों की तरह हैं और हमें पूरी तस्वीर का पता नहीं है इसलिए ऐसा कोई तरीका नहीं है कि हम उन सभी टुकड़ों को जोड़ सकें। कई बार दूरदर्शिता हमें परमेश्वर के ईश्वरीय कार्य करने की झलक दे देती है। परन्तु हमारे जीवनों की कई परिस्थितियां और घटनाएं, यदि कोई हों, हमारे लिए इनके अर्थ का काम कर सकती हैं। हमें यह भरोसा करने के लिए छोड़ा गया है कि परमेश्वर हमारे जीवनों में भलाई उत्पन्न करने के लिए काम करेगा (रोमियों 8:28)।

38:4-38 में परमेश्वर के ताने भरे प्रश्न पृथ्वी की सृष्टि तथा प्रकृति के आस पास घूमते हैं, नौ श्रेणियों में बांटा जा सकता है। प्रत्येक भाग में परमेश्वर के शानदार कार्य का वर्णन करती शानदार उपमाएं हैं। वह संसार का सृजनहार, पालनहार और प्रभु है।

पृथ्वी की नींव रखना (38:4-7)। पृथ्वी की सृष्टि को परमेश्वर की वास्तुकला के बेहतरीन नमूने के रूप में दिखाया गया है। उसने नींव रखी और इसके नाप ठहराए। उसने इसकी नींव रखी और इसके कोने का पत्थर बिठाया।

समुद्र का बाड़ा लगाना (38:8-11)। समुद्र की सृष्टि को एक बच्चे के कोख में से निकलने के रूप में दिखाया गया है। इसे नवजात शीशु को लपेटने वाली पट्टियों की तरह बादल में लपेटा गया था। समुद्र के ऊपर परमेश्वर के अधिकार को इस तथ्य में देखा जाता है कि वह इसकी सीमाएं तय करता है। इन्हें इसे बंद करने वाले कब्जों और पेचों वाले दरवाजे के रूप में दिखाया गया है।

भोर को लाना (38:12-15)। सूर्य के उदय होने से चमक उठने वाले पृथ्वी के दृश्य, मोहर लगी मिट्टी में लगी छापों की तरह न्यारे होते हैं। परमेश्वर दुष्टों के बुरे कामों को सामने लाने और उन्हें बर्बाद करने के लिए चमकदार रौशनी का इस्तेमाल करता है।

गहरे स्थानों में प्रवेश करना (38:16-18)। परमेश्वर पृथ्वी की गहराइयों के साथ साथ समुद्र की गहराइयों के ऊपर भी प्रभुत्व करता है। मृत लोगों के संसार को, फाटकों वाले नगर के रूप में दिखाया गया है जिनमें से प्रवेश किया जाता है। अय्यूब ने चाहे शियोल, अधोलोक पर बहुत बातें की थी पर उसने स्वयं उस स्थान को नहीं देखा था।

उजियाले और अंधकार के निवास स्थान को जानना (38:19-21)। उजियाला और अंधकार जिन्हें परमेश्वर ने सृजा को घरों में रहने वाले लोगों के रूप में दिखाया गया है। हर सुबह उजियाला पृथ्वी को चमकाने के लिए अपने निवास स्थान से निकलता और शाम के समय घर लौट आता है। अंधेरा सुबह तक अपनी बारी देता है। अंधेरा और उजियाला परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार काम करते रहते हैं।

हिम तथा ओलों के भण्डार में जाना (38:22-24)। हिम तथा ओलों को परमेश्वर के शस्त्रागार में रखे हथियारों के रूप में दिखाया गया है जो युद्ध के समय में इस्तेमाल के लिए तैयार रहते हैं। पुराने नियम में परमेश्वर आम तौर पर युद्ध में अपनी सहायता के लिए मौसम को

बदल देता था। उसने इस्राएल को छुड़ाने के लिए वर्षा और ओले भेजे और यहां तक कि सूर्य को भी ठहरा दिया।

वर्षा को भेजना (38:25–30)। वर्षा को सूखी और प्यासी धरती को पानी देने के लिए आकाश से एक नाले के बीच में से बहते हुए दिखाया गया है। परमेश्वर ऐसे निर्जन स्थानों को सींचता है, उन स्थानों के बहने वाले जीव जंतुओं के प्रति अपना प्रेम और लगाव दिखाते हुए। यही परमेश्वर ओस, पाले, तथा बर्फ के अलग–अलग रूपों में नमी देता है।

तारों को नियन्त्रण करना (38:31–33)। तारों की राशियों (ऋष, मृग, और तारामण्डल) उन नियमों से तय होते हैं जो उसने ठहराए हैं। उन्हें बांधने, खोलने, उदय करने, और चलाने की शक्ति केवल उसी के पास है। राशियां, उन पालतू जानवरों की तरह है जिन्हें उनके मालिक की निगरानी में पटे से बांधा गया है।

बादलों को आज्ञा देना (38:34–38)। परमेश्वर बादलों पर शासन करता है ताकि वे उसकी आज्ञा मिलने पर वर्षा को भेजे। जब ऐसा होता तो ये वैसे ही जैसे आकाश में पानी के कुप्पों को पृथ्वी पर उण्डेल दिया जाए।

सारांश। अय्यूब परमेश्वर द्वारा पूछे गए प्रश्नों से शर्मशार हो गया क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं कि उसे मानवीय सीमाओं का स्मरण कराया गया था (38:21)। अय्यूब ने उतावली में ऐसी बातें कह दी थी जिसकी उसे समझ नहीं थी (38:2)। जो प्रश्न परमेश्वर ने अय्यूब से पूछे थे वे हमें फिर से इस बात पर ज़ोर देने वाले होने चाहिए कि हम कितने कमज़ोर हैं और परमेश्वर सचमुच में कितना बड़ा है। हमारे लिए संदेश यह है कि हम अपने आपको अपने प्रिय और विश्वास योग्य सृजनहार के आगे सौंप दें। परमेश्वर करे कि हमारे जीवनों में उसकी इच्छा पूर्ण हो!

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 692. [2]एड्विन एम. गुड, *आयरनी इन द ओल्ड टैस्टामैंट* (फिलाडेल्फिया: द वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1965), 235. [3]रॉबर्ट एच. फ़ेफर, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1941), 691. [4]आर. ए. एफ. मैकेंज़ी, "द परपज़ ऑफ़ द याहवेह स्पीच इन द बुक ऑफ़ अय्यूब," *बिब्लिका* 40 (1959): 441. [5]वहीं, 441–42. [6]गुड, 31–32. [7]शायद यीशु के शब्दों से हमें प्रभु के प्रश्नों में इन जानवरों के उपयोग को समझने में सहायता मिले: "इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे; और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?" (मत्ती 6:25, 26)। [8]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर–वर्सिटी प्रैस, 1974), 269. [9]रेबर्न, 693. [10]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 495, एन. 21.

[11]वहीं, 496. [12]रेबर्न, 705. [13]वहीं। [14]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 517. [15]हार्टले, 502. [16]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 337. [17]एंडरसन, 278. [18]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 377. [19]तारों का यह छोटा झुण्ड वृष राशि का भाग है।

प्राचीन मिथालजी में कहा जाता था कि सात बहनों को मृगशिरा से बचाने के लिए देवताओं ने तारे बना दिया था। एक छुपा हुआ था। (देखें रेबर्न, 781.) [20]शिकारी मृगशिरा के एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में सिंह की खाल है। तारे उसका कमरबंद और उसकी तलवार हैं (वहीं, 782)।

[21]सबसे आसानी से देखे जा सकने वाले तारों को बिग डिप्पर (बड़े सप्तर्षि की पूंछ) और लिट्टल डिप्पर (छोटा सप्तर्षि) कहा जाता है। छोटे सप्तर्षि की पूंछ उत्तरी तारे पोलारिस (पोल, पोलर स्टार या ध्रुव तारा) के साथ मिलती है। इन तारामण्डलों को उरसा मेजर (सप्तर्षि तराजूथ) और उरसा माइनर (ध्रुव तारा या ऋक्ष, या मत्स्य तराजूथ) के नाम से भी जाना जाता है। (वहीं, 783.) [22]वहीं, 713; देखें TEV; CEV. [23]सेमुएल रोअले ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सजेटिकल कॉमैंट्री ऑन द बुक्स ऑफ़ अय्यूब*, द इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमैंट्री (एडिनबर्ग टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 335. [24]एच. एच. रोअले, *अय्यूब*, द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 315. [25]देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 376, 967. एक और व्याख्या यह है कि यह शब्द ''आयबिस'' (सारस के प्रकार का एक पक्षी – अनुवादक) और ''मुर्गा'' से सम्बन्धित हैं जो ''बुद्धि के लिए प्रसिद्ध (दो पक्षी हैं) और उन्हें मौसम के बदलाव के साथ जोड़ा जाता है'' (हार्टले, 501, एन. 9; देखें TEV; NJB; CEV)। [26]रोअले, 317.